ISSN - 2348-2397
APPROVED UGC CARE

SHODH SARITA
Vol. 7, Issue 25, January-March, 2020
Page Nos. 154-159

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

समाजिक परिवर्तन में मीडिया की भूमिका

(अल्मोड़ा जनपद के द्वाराहाट विकास खण्ड के विशेष सन्दर्भ में एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)

राधा*
डॉ0 रेनू प्रकाश**

शोध सारांश

कोई भी समाज स्थिर नही होता, परिवर्तन प्रकृति का नियम है और कोई भी समाज इस प्रक्रिया से अछूता नही होता। परिवर्तन की इस प्रक्रिया में मीडिया का अपना विशेश महत्व है, कहने का आशय यह है कि भारतीय परम्परागत समाज के स्वरूप को परिवर्तित करने की दिशा में मीडिया ने अपनी एक उल्लेखनीय भूमिका का निर्वहन किया है। जिसके परिणाम स्वरूप आज समाज का कोई भी ऐसा पहलु नही है जहां मीडिया के प्रभाव एंव परिणाम को नही देखा जा सकता। वास्तव में मीडिया जनसंचार का एक ऐसा सशक्त माध्यम है, जिसने समाज के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एंव सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिया है, जिसके समाज में सकारात्मक एंव नकारात्मक दोनों प्रभाव पड़े है। अतः प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से द्वाराहाट विकास खण्ड जैसे परम्परागत समाज में मीडिया की प्रमुख भूमिका को स्पश्ट करने का प्रयास किया गया है।

Keywords : सामाजिक परिवर्तन, मीडिया, जनसंचार।

प्रस्तावना

जैसा कि यह सर्वविदित है कि परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है तथा कोई भी समाज परिवर्तन की इस प्रक्रिया से अछूता नही है। परिवर्तन की प्रक्रिया में मीडिया का अपना विशेश महत्व है। मीडिया ने व्यक्त्यिों के विचारों, उनके जीवन स्तर, व्यवसाय एंव रहन सहन के ढंग को पूरी तरह से परिवर्तित कर दिया है। मीडिया शब्द का तात्पर्य जनसंचार माध्यम जैसे – समाचार पत्र, रेडियों, टेलीविजन, सिनेमा, विज्ञापन, कम्पूटर तथा इन्टरनैट इत्यादि से है। विकास में मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण है एंव मीडिया का प्रभाव समाज में सकारात्मक एंव नकारात्मक दोनों ही रूपों में दिखाई देता है। मीडिया पर प्रसारित कार्यक्रमों के द्वारा समाज में अनेक परिवर्तन हो रहे है।[1] मीडिया संचार का सबसे सशक्त माध्यम है जो व्यक्ति को सही समय पर सही निर्णय लेने हेतु मदद करता है। आज सम्पूर्ण विश्व में व्यक्तियों के विचारों, भावनाओं, समस्या विशेश पर मीडिया की उपयोगिता से इनकार नही किया जा सकता। मीडिया ही हमें यह ज्ञान देता है कि हम अपने विचारों को कैसे दूसरों के सामने प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करे ताकि हमारे व्यक्तित्व का विकास हो सकें।[2]

जैसा कि हम जानते है मीडिया संचार का एक सशक्त माध्यम है, मीडिया के अर्न्तगत प्रिन्ट मीडिया और इलैक्ट्रानिक मीडिया दोनों को सम्मिलित किया जाता है। ये दोनों सोशियल मीडिया आज देश और समाज की सामाजिक, आर्थिक एंव राजनैतिक सभी प्रकार की गतिविधियों को प्रभावित कर कई प्रकार के परिवर्तन भी ला रही है। संचार के विकास का सिलसिला प्राचीन काल से चला आ रहा है और वर्तमान में भी निर्बाध गति से विकास के पथ पर अग्रसर है।[3] मनुश्य आदि काल से ही किसी न किसी तरीके से संचार करता आ रहा है, परन्तु वर्तमान में संचार का परिश्कृत रूप दृश्टिगत होता है जिससे लाखों लोगों को एक साथ जानकारी पहुचायी जा सकती है। इन्हें जनसंचार या मास कम्यूनीकेसन मीडिया कहा जाता है।[4]

संचार साधनों ने व्यक्ति के सामाजिक, पारिवारिक, राजनैतिक, सांस्कृति, साहित्यिक जीवन को प्रभावित कर दिया है, उसने आधुनिक जीवन पद्धति को नई दिशा दे दी है। संचार के साधनों में निरन्तर परिवर्तन व विकास से समाज में भी परिवर्तन दृश्टिगोचर होने लगे है। आज से तीन चार दशकों पूर्व जनसंचार माध्यमों या साधनों का सुलभता से अवदान नही हुआ था। धीरे–धीरे दूरदर्शन, रेडियो का विकास व पत्र–पत्रिकायें विकसित हुई। इलैक्ट्रानिक संसाधनों का उपयोग निरन्तर बढ चला है जिसमें उपग्रह, सैल्यूलर फोन, फैक्स, टेलीप्रिन्ट, कम्पूटर, इन्टरनेट, ई–मेल आदि सम्मिलित है। सूचना संसाधनों के अवदान के कारण ही भारत जैसे विकासशील देश में सामाजिक आर्थिक परिवर्तन सम्भव हो पाये है।[5] इस प्रकार स्पश्ट है कि

*शोध छात्रा – समाजशास्त्र विभाग, एस0एस0जे0 परिसर अल्मोड़ा।
**एसोसिएट प्रोफेसर – समाजशास्त्र विभाग, एस0एस0जे0 परिसर अल्मोड़ा।

मीडिया संचार का एक सशक्त माध्यम है साथ ही यह भी वास्तविकता है कि, सामाजिक परिवर्तन में मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। अतः प्रस्तुत शोधपत्र के अन्तगर्त यह जानने का प्रयास किया गया है कि सामाजिक परिवर्तन में मीडिया की प्रमुख भूमिका क्या है? तथा उनसे होने वाले परिवर्तनों को मुख्य शोध बिन्दु के रूप में रेंखांकित किया गया है।

साहित्य सर्वेक्षण

गुप्ता दीपक, मेहता विवेक (2017) ने सागर नगर के 48 वार्डो के परिवार के मुखिया से विशय वस्तु के सन्दर्भ में अपने अध्ययन में पाया कि प्रिन्ट मीडिया एंव इलैक्ट्रानिक मीडिया के अन्तगर्त समाचार पत्र, पत्रिकाओं, टी0वी0 सीरियल, न्यूज, सोशियल मीडिया आदि के माध्यम से समाज में बच्चों, युवाओं, महिलाओं पर सर्वाधिक नकारात्मकता का प्रभाव पड़ता है। जहॉ एक ओर इलैक्ट्रानिक मीडिया और प्रिन्ट मीडिया समाज को शिक्षित तथा जागरूक बनाने में सकारात्मक भूमिका का निर्वहन कर रहा है वही दूसरी ओर कुछ नकारात्मक प्रभाव विचलित व्यवहार के रूप में परिलक्षित हो रहे है।[6]

दोशी एस0एल0 (2002) के अनुसार भारतीय समाज पर आधुनिकीकरण, पश्चमीकरण, नवीन प्रौद्योगिकी आदि प्रभाव के कारण अनेक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए है। जिसके कारण वर्तमान समाज तथा व्यक्ति की सोच में काफी बदलाव आया है। आज के बदलते परिवेश और आधुनिकीकरण के कारण विशेशकर युवा जनों के विचारों, व्यवहारों, रूचियों आदतों एंव दृश्टिकोणों में महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे जा रहे है जो कि पुरानी पीढी सें बिल्कुल ही भिन्न दिखाई पड़ते है।[7]

जोशी संजय (2016) ने अपने अध्ययन में पाया कि ग्रामीण समाज में जनसंचार के साधन सामाजिक कुरीतियों को कम व दूर करने में, ग्रामीण दरिद्रता को कम करने में और विकास योजनाओं को अन्तिम व्यक्ति तक पहुचानें में सार्थक भूमिका निभा रहा है। साथ ही कृशक वर्ग अब न्यूज मीडिया के सहारे उन्नति और विकास के पथ पर अग्रसर हो उठे है। मौसम की स्थिति और कृशि से सम्बन्धित सभी जानकारी वह घर बैठे अपने लैपटाप या मोबाइल पर प्राप्त कर लेते है। इससे उनके धन, समय और श्रम की बचत होती है, जिसे वे किसी और उत्पादक कार्य पर खर्च कर सकते है।[8]

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य सामाजिक परिवर्तन में मीडिया की प्रमुख भूमिका तथा समाज में उनसे पड़ने वाले प्रमुख प्रभावों को शोध बिन्दु के रूप में विश्लेशण करना है।

अध्ययन की प्रासंगिकता

मीडिया संचार का एक ऐसा सशक्त माध्यम है जिसने समाज के सामाजिक, आर्थिक एंव राजनैतिक सभी गतिविधियों को प्रभावित कर समाज में एक क्रान्तिकारी एंव विचारणीय परिवर्तन को जन्म दिया है। प्रस्तुत अध्ययन द्वाराहाट विकास खण्ड के ग्रामीण क्षेत्र से संबधित है, अतः यहा पर यह अध्ययन इसलिए भी विशेश महत्व का हो जाता है क्योकि यह समाज परम्परागत समाज होते है। जहां आज भी परम्परागत विचारधाराएं कही अधिक गहरे तक अपनी जड़ जमाये हुए होते है, अतः यहा पर मीडिया द्वारा समाज में परिवर्तन को देखना आवश्यक हो जाता है। प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य ही सामाजिक परिवर्तन में मीडिया की भूमिका का स्पश्ट करना है। अतः प्रस्तुत शोधपत्र में प्रिन्ट मीडिया और इलैक्ट्रानिक मीडिया की भूमिका एंव जनजीवन पर पडनें वाले प्रभावों एंव परिणामों को स्पश्ट किया गया है।

शोध अभिकल्प एंव पद्धति शास्त्र

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य अन्वेशणात्मक है अतः शोध हेतु इस अध्ययन में अन्वेशणात्मक एंव विवेचनात्मक शोध अभिकल्प का उपयोग किया गया है। जैसा कि हम जानते है परिवर्तन प्रकृति का नियम है और कोई भी समाज इससे अछूता नही है। आधुनिकीकरण के इस वर्तमान परिप्रेक्ष्य के सन्दर्भ में यदि बात की जाय तो सामाजिक परिवर्तन में मीडिया की भूमिका के महत्व को हम नकार नही सकते। द्वाराहाट विकास खण्ड जैसे परम्परागत समाज में मीडिया की भूमिका को देखना वर्तमान समाज की आवश्यकता भी है। अतः अध्ययन क्षेत्र की परम्परागतता को ध्यान में रखकर मुख्य रूप से अन्वेशणात्मक शोध अभिकल्प ही प्रस्तुत अध्ययन के लिये उपयुक्त समझा गया। अन्वेशणात्मक दृश्टिकोण से विभिन्न परिप्रेक्ष्यों जैसे सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एंव आधुनिकीकरण के सन्दर्भ में सामाजिक परिवर्तन में मीडिया की भूमिका का अध्ययन कर उसकी एक समाजशास्त्रीय व्याख्या प्रस्तुत की गई है। प्रस्तुत अध्ययन निर्दश पर आधारित है, अल्मोड़ा जनपद का द्वाराहाट विकास खण्ड कुल 11 न्याय पंचायतों में विभक्त है। जिसमें अध्ययन हेतु दो न्याय पंचायतें विजयपुर एंव रियूनी को चयनित किया गया है। प्राथमिक सर्वेक्षण के आधार पर ये दोनों ही न्याय पंचायतें द्वाराहाट विकास खण्ड की सबसे बड़ी न्याय पंचायतें है। अतः अध्ययन के दृश्टिकोण से ये न्याय पंचायते हमारे अध्ययन का समग्र बनी। विजयपुर न्याय पंचायत में 14 ग्राम पंचायतों है जिसकें अन्तगर्त 22 राजस्व ग्राम है, जिसमें कुल 1487 परिवार निवासरत है। इसी प्रकार न्याय पंचायत रियूनी में 13 ग्राम पंचायतें है जिसके अन्तगर्त 25 राजस्व ग्राम है, इसमें कुल 1993 परिवार निवासरत है। परिवारों की संख्या अधिक होने के कारण इन्हें समग्र रूप में सम्मिलित नही किया जा सकता था। अतः अध्ययन हेतु दैव निर्दशन पद्धति का उपयोग तथा निदर्श चयन का निर्णय लिया गया। निदर्श पूर्णतया प्रतिनिधित्वपूर्ण रहे इस लिए निणर्य लिया गया कि दोनों न्याय पंचायतों में निवास करने वाले परिवारों में से 10 प्रतिशत का चयन किया जाये, अतः 10

प्रतिशत का चयन लाटरी पद्धति द्वारा किया गया है। इस प्रकार प्रस्तुत अध्ययन विजयपुर एंव रियूनी न्याय पंचायतों में निवासरत परिवारों का 10 प्रतिशत (विजयपुर 149 तथा रियूनी 199 परिवार) कुल 348 अध्ययन ईकाइयो पर आधारित है।

प्रस्तुत अध्ययन मुख्य रूप से प्राथमिक आकड़ों पर आधारित है तथा आकड़ें एकत्र करने के लिए मुख्य रूप साक्षात्कार अनुसूचि तथा आवश्यकतानुसार असहभागी अवलोकन पद्धति का उपयोग किया गया है।

उपलब्धिया

अध्ययन से प्राप्त आकड़ों का विश्लेशण निम्नांकित सारणियों द्वारा स्पश्ट किया गया है।

सारणी संख्या 01

सामाजिक परिवर्तन में मीडिया की अहम भूमिका, के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं के मत।

क0 सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हा	289	83.05
2	नही	18	5.17
3	कह नही सकते	41	11.78
	योग	**348**	**100.00**

उपरोक्त सारणी के आधार पर कहा जा सकता है कि सर्वाधिक उत्तरदाता (83.05 प्रतिशत) का मानना है कि सामाजिक परिवर्तन में मीडिया की एक अहम भूमिका होती है, 5.17 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसा नही मानते है। जबकि 11.78 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस सन्दर्भ में अपना कोई भी स्पश्ट मत व्यक्त नही किया है। अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि सर्वाधिक उत्तरदाता इस बात को स्वीकार करते है कि सामाजिक परिवर्तन में मीडिया की भूमिका अहम होती है।

सारणी संख्या 02

सरकार के विकास कार्यो की पूर्ण जानकारी मीडिया के माध्यम से पहुच रही है, के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं के मत।

क0 सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हा	209	60.06
2	नही	30	8˙62
3	कभी–कभी	109	31.32
	योग	**348**	**100.00**

सारणी के अनुसार सर्वाधिक उत्तरदाताओं (60.06 प्रतिशत) का मानना है कि सरकार द्वारा समय–समय पर किये गये विकास कार्यो की पूर्ण जानकारी उन्हें मीडिया के माध्यम से ही प्राप्त होती है, जबकि सबसे कम उत्तरदाता (8.62 प्रतिशत) ऐसा नही मानते है। इसके विपरीत 31.32 प्रतिशत ने यह भी स्वीकार किया है कि मीडिया के माध्यम से कभी कभी ही उन्हे विकास कार्यो की जानकारी प्राप्त होती है। अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि सर्वाधिक उत्तरदाताओं को मीडिया के माध्यम से ही समाज में होने वाले विकास कार्यो की जानकारिया प्राप्त होती है।

सारणी संख्या 03

संचार के माध्यमों से परम्परागत व्यवसाय की जगह नवीन व्यवसाय प्रणाली के जन्म , के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं के मत।

क0 सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रति□ात
1	सहमत	320	91.96
2	असहमत	25	7.18
3	अनिश्चित	3	0.86
	योग	**348**	**100.00**

ऐसा माना जाता है कि संचार के विभिन्न माध्यमों ने समाज के परम्परागत व्यवसाय में भी कई परिवर्तन ला दिये है, हमारे अध्ययन में भी इस बात की पुश्टि होती है। क्योकि सर्वाधिक उत्तरदाता (91.96 प्रतिशत) इस मत से सहमत है कि संचार कें माध्यमों द्वारा परम्परागत व्यवसाय के स्थान पर नवीन व्यवसाय प्रणाली जन्म ले रही है। जबकि 7.18 प्रतिशत उत्तरदाता इस मत से असहमत तथा 0.86 प्रतिशत उत्तरदाता अनिश्चित है। अतः स्पश्ट है कि प्राप्त आकड़ें इस बात की ओर इंगित करते है कि संचार के माध्यम परम्परागत व्यवसाय को परिवर्तित करके नवीन व्यवसाय प्रणाली को जन्म दे रहे है।

सारणी संख्या 04

समाज मे होने वाले विभिन्न आधुनिक परिवर्तनों का मीडिया द्वारा आम लोगों तक पहुचानें, के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं के मत।

क0 सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हॉ	294	84.48
2	नहीं	8	2.30
3	कह नही सकते	46	13.22
	योग	**348**	**100.00**

सारणी के अनुसार सर्वाधिक उत्तरदाताओं (84.48 प्रतिशत) का मानना है कि समाज में होने वाले विभिन्न आधुनिक परिवर्तनों को मीडिया आम व्यक्तियों तक पहुचाने का कार्य करती है, इसके विपरीत सबसे कम उत्तरदाता (2.30 प्रतिशत) इस बात को अस्वीकार करते है। जबकि 13.22 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस सम्बन्ध में अपना कोई भी स्पश्ट मत व्यक्त नही किया है। अतः संक्षेप में कहा जा सकता है कि सर्वाधिक उत्तरदाताओं ने इस बात को स्वीकार किया है कि मीडिया समाज में होने वाले विभिन्न आधुनिक परिवर्तनों को आम जन तक पहुचानें का कार्य करती है। परिणाम स्वरूप समाज में जनजागरूकता आती है।

सारणी संख्या 05

मीडिया से प्राप्त धार्मिक सूचनायें समाज में दंगे फसाद उत्पन्न करते है, के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं के मत।

क0 सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हॉ	208	59.77
2	नहीं	46	13.22
3	कह नही सकते	94	27.01
	योग	**348**	**100.00**

मीडिया के नकारात्मक स्वरूप को स्पश्ट करते हुए सारणी के आकड़े बताते है कि सर्वाधिक उत्तरदाता (59.77 प्रतिशत) इस बात को स्वीकार करते है कि मीडिया से प्राप्त कई धार्मिक सूचनाएं समाज में दंगे फसाद उत्पन्न करने का कारण बनती है। जबकि 13.22 प्रतिशत उत्तरदाता इस मत को स्वीकार नही करते है, साथ ही 27.01 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस विशय में अपना कोई भी स्पश्ट मत व्यक्त नही किया है। निश्कर्श के रूप में कहा जा सकता है कि सर्वाधिक उत्तरदाताओं का मानना है कि अधिकांशतः मीडिया से प्राप्त सूचनाये समाज में नकारात्मक प्रभाव भी डालती है। धार्मिक सूचनायें कई बार सामाजिक विघटन का कारण भी बनती है, जो दंगे फसाद को भड़काने में सहायक हो सकती है।

सारणी संख्या 06

ग्रामीण क्षेत्रों में मीडिया के माध्यम से छुआछूत, अस्पृश्यता या जातिगत बन्धन में परविर्तन हुआ है, के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं के मत।

क0 सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हॉ	275	79.02
2	नहीं	26	7.47
3	कह नही सकते	47	13.51
	योग	**348**	**100.00**

सारणी के अनुसार सर्वाधिक उत्तरदाताओं (79.02 प्रतिशत) का मानना है कि वर्तमान समय में मीडिया के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में छुआछूत, अस्पृश्यता या जातिगत बंधनों में धीरे–धीरे परिवर्तन आने लगा है, जबकि 7.47 प्रतिशत उत्तरदाता इस मत को अस्वीकार करते है। 13.51 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इस मत कि विशय में अपना कोई भी स्पश्ट मत व्यक्त नही किया है। अतः निश्कर्श तौर पर कहा जा सकता है कि मीडिया मे माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक परिवर्तन स्पश्ट रूप से दिखाई देता है। क्योकि मीडिया ने लोगों के विचारों एंव सोचने समझने की शक्ति को परिवर्तित करने की दिशा में एक सकारात्मक भूमिका का निर्वहन किया है। जिससे जातिगत बंधन ढीले होने के साथ ही छुआछूत तथा अस्पृयश्यता जैसी कुरितिया धीरे–धीरे समाप्त होने लगी है।

सारणी संख्या 7

मीडिया के द्वारा महिला सशक्तीकरण को बढावा मिला है, के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं के मत।

क0 सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	हॉ	295	84.77
2	नहीं	16	4.60
3	कह नही सकते	37	10.63
	योग	**348**	**100.00**

उपरोक्त सारणी के आधार पर कहा जा सकता है कि सर्वाधिक उत्तरदाताओं (84.77 प्रतिशत) ने यह स्वीकार किया है कि मीडिया के माध्यम से महिला सशक्तिकरण को बढावा मिला है, जबकि 4.60 प्रतिशत उत्तरदाता इसे अस्वीकार करते है। 10.63 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे है जो इस विशय में अपना कोई भी स्पश्ट मत व्यक्त नही करते। अतः स्पश्ट है कि मीडिया एक ऐसा माध्यम है जो महिला सशक्तिकरण को बढावा देने के साथ महिलाओं को जागरूक भी करता है।

सारणी संख्या 8

संचार के साधनों में वृद्धि होने से समाज के विकास एंव परिवर्तन, के सन्दर्भ में उत्तरदाताओं के मत।

क0 सं0	प्रत्युत्तर	आवृत्ति	प्रतिशत
1	सहमत	324	93.10
2	असहमत	20	5.75
3	अनिश्चित	4	1.15
	योग	**348**	**100.00**

सारणी के आधार पर कहा जा सकता है कि सर्वाधिक उत्तरदाता (93.10 प्रतिशत) इस मत से सहमत है कि संचार के साधनों की वृद्धि होने पर समाज में विकास एंव परिवर्तन की गति को भी बढावा मिलता है। जबकि 5.75 प्रतिशत उत्तरदाता इस मत से असहमत तथा 1.15 प्रतिशत उत्तरदाताओं का उत्तर अनिश्चत है। अतः स्पश्ट है कि सर्वाधिक उत्तरदाता इस मत को स्वीकार करते है कि संचार के साधनों में वृद्धि होने से समाज में भी विकास दर बढती है।

निष्कर्ष

निश्कर्श रूप में कहा जा सकता है कि सामाजिक परिवर्तन में मीडिया की भूमिका को अस्वीकार नही किया जा सकता है। अध्ययन से प्राप्त आकड़ों के अनुसार कहा जा सकता है कि सामाजिक परिवर्तन में मीडिया की एक महत्वपूर्ण एंव अहम भूमिका होती है, क्योकि सर्वाधिक उत्तरदाओं द्वारा इस तथ्य को स्वीकार भी किया गया है। उत्तरदाताओं का मानना है कि सरकारी तौर पर जितने भी विकास कार्य समाज में होते है उन्हे

उनकी पूर्ण जानकारी मीडिया के माध्यम से ही प्राप्त होती है। उनका यह भी मानना है कि मीडिया के विभिन्न साधनों से प्राप्त जानकारिया व्यक्तियों के सोचने समझने एंव विचार करने की प्रवृत्ति में अनेकों परिवर्तन लाते है। संचार के माध्यमों से प्राप्त जानकारियों के कारण परम्परागत व्यसायों में भी अनेक परिवर्तन दृश्टिगत होते है। मीडिया के नकारात्मक पहलू को स्पश्ट करते हुए सर्वाधिक उत्तरदाताओं ने यह भी स्वीकार किया है कि मीडिया से प्राप्त धार्मिक सूचनायें कई बार दंगे फसाद का कारण भी बनती है। साथ ही दूसरी ओर इसके सकारात्मक स्वरूप को स्वीकार करते हुए उत्तरदाताओं का मानना है कि मीडिया ने जाति व्यवस्था मे भी कई परिर्वतन ला दिये है। क्योंकि सर्वाधिक उत्तरदाताओं का मानना है कि मीडिया के माध्यम से छुआछूत, अस्पृश्यता एंव जातिगत रूढिगत विचार भी परिवर्तित हुए है। महिलाओं की स्थिति परिवर्तन के सन्दर्भ में भी सर्वाधिक उत्तरदाताओं का मानना है कि मीडिया के माध्यम से महिला सशक्तिकरण में भी वृद्धि हुई।

सन्दर्भ :—

1. खरे संजय, ''सामाजिक मीडिया का यूवाओं पर प्रभाव : एक समाजशास्त्रीया अध्ययन'' राधा कमल मुकर्जीः चिन्तन परम्परा, वर्श 17 अंक 2, जुलाई — दिसम्बर 2015 पेज नं0 89।
2. खरे संजय, ''सामाजिक मीडिया का यूवाओं पर प्रभाव : एक समाजशास्त्रीया अध्ययन'' राधा कमल मुकर्जीः चिन्तन परम्परा, वर्श 17 अंक 2, जुलाई — दिसम्बर 2015 पेज नं0 89।
3. चौधरी दिनेश कुमार, ''युवाओं पर जनसंचार के साधनों का प्रभाव : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन'' राधा कमल मुकर्जीः चिन्तन परम्परा, वर्श 18 अंक 2, जुलाई — दिसम्बर 2016 पेज नं0 86।
4. भाटिया, ''उच्चतर माध्यमिक हिन्दी : राश्ट्रीय मुक्त विद्यालय शिक्षा संस्थान'' गीता आफसेट प्रिर्न्टस नई दिल्ली 2006 पेज नं0 79।
5. जोशी ललित चन्द्र, ''सूचना, संचार प्रौद्योगिकि एंव आवश्यकता'' राधा कमल मुकर्जी : चिन्तन परम्परा, वर्श 17 अंक 1, जनवरी — जून 2015 पेज नं0 122।
6. गुप्ता दीपक, मेहता विवके, ''टेलीविजन एंव मीडिया द्वारा नकारात्मक विचारों के प्रसारण — प्रस्तुतिकरण की एक परिणति : समाज में व्याप्त अपराधिकता'' ''राधा कमल मुकर्जीः चिन्तन परम्परा, वर्श 19 अंक 1, जनवरी — जून 2017 पेज नं0 102।
7. दोशी एस0एल0, ''आधुनिकता, उत्त्रआधुनिकता एंव नव समाजशाऱ्त्रीय सिद्धान्त'' रावत पब्लिकेशन नई दिल्ली 2002 पृश्ठ सं0 127।
8. जोशी संजय, ''जनसंचार एंव सूचना तकनीकि के साधन तथा ग्रामीण विकास'' राधा कमल मुकर्जीः चिन्तन परम्परा, वर्श 18 अंक 1, जनवरी — जून 2016 पेज नं0 42।

❑❑❑